मुखपृष्ठ

साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 42, अगस्त(प्रथम) , 2018

पुस्तक समीक्षा - खोजना होगा अमृत कलश

■आर्थिक-सामाजिक विसंगतियों पर शब्दों रूपी बाणों की वर्षा करती प्यारी कविताओं का गुलदस्ता■

समीक्षक- ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

कविता संग्रह- 'खोजना होगा अमृत कलश'

लेखक- राजकुमार जैन राजन

प्रकाशक- अयन प्रकाशन, 1/20, महरौली, नई दिल्ली-30

मूल्य- 240 रु.

संस्करण- 2018

पृष्ठ- 120 ,

प्रकाशन वर्ष- 2018

पुस्तक प्राप्ति हेतु संपर्क-09828219919

कविता कवि के अंतर्मन के अंतद्वंद्व से उपजी शब्दों की वह विथिका है जो कागज पर उभरे भावों की वजह से सब को अपनी ओर आकर्षित करने का दम रखती है. जिस वीथिका में जितने ज्यादा तरह- तरह के फूल होते हैं वह वीथिका उतनी सुंदर दिखाई देती है। राजकुमार जैन राजन के प्रस्तुत कविता संग्रह कविताओं रूपी फूलों से संग्रहित वही वीथिका है जिस सूक्ष्म संवेदनाओं रूपी भावों में भीगे, सार्थक उद्देश्य की सुगंध से सरोबार और शब्दों रूपी पंखुड़ियों से सजी कविताओं के पुष्पगुच्छों ने इसे खूबसूरती प्रदान की है।

इस संग्रह की कविताओं में अंतर्मन की व्यथा सम्पूर्ण भावों और संदेश के साथ व्यक्त हुई है. इस की बानगी देखिए-

''उसे देखा था मैंने दादर के पूल के नीचे/एक कोने में, निराशा के घनघोर बादलों में/ टुकड़े-टुकड़े हुई जिंदगी के लिए/ रोशनी के टुकड़े ढूढते हुए।''

'हाशिए पर जिंदगी' कविता की यह पंक्तियां कवि के अंतर्भावों को व्यक्त करती है। वह निराशा के गर्त में डूबी जिंदगी के लिए अपनी कविता में जिस अंतर द्वंद्व, रचनात्मक दायित्वबोध और परिस्थितियों का शब्द चित्रण करता है वह पठनीय है. सम्पूर्ण कविता कवि के भावों को कागज पर उकेर कर रख देती है। पाठक जब कविता को पढ़ता है तब लगता है कि वह अपने मन के भावों को कविता में स्वयम पढ़ते हुए एक सुखद और मनोकुल अनुभूति कर रहा हैं।

राजकुमार जैन राजन कोमल मन के, जिज्ञासाओं से भरपूर, बालसुलभ चंचलता, चपलता और जोश से भरेपूरे व्यक्तित्व के सहृदय कवि है। इनकी बेबाकी, सरलता, सहजता, सौम्यता इन के व्यवहार के साथ-साथ इन की रचनाओं में देखी जा सकती है। इसी की वजह से ये बड़ी से बड़ी और गंभीर से गंभीर बात बड़ी सहजता से कह जाते हैं। 'जिंदगी का गीत' कविता की यह पंक्तियां देखें-

''मां बहनों से नाता तोड़/भ्रम के ताने-बाने में उलझ कर/अनाथों की तरह भटकते युवा-वृद्ध/फेंक रहे हैं हिंसा व नफरत के ढेले।''

वहीं 'तुम कौन हो ?' कविता में कवि अपनी पहचान के रूप में मानवता की पहचान खोजता हुआ नजर आता है। मानव कौन है? कहां था और कहां पहुंच गया? उसकी परंपरा, संस्कृति और इतिहास क्या था और क्या हो गया? इस कविता में इसी गहरी संवेदनात्मक चिंता और सांस्कृतिक विद्रुपताओं को रेखांकित किया गया है। यह पाठकों को अपने मन में झांकने और जाँचने को प्रेरित करती है।

'खण्ड-खण्ड अस्तित्व' कविता में-

''जखम जो उभरे सीने पर/ख्वाब में झिलमिलाते हैं/जब दिल का दर्द आंसू बन कर / आंखों से छलकता है/वेदनाएं थकी सांस-सी चलने लगती है।''

कवि रिश्तों और संबंधों के बदलते मायने पर अपनी चिंता को कविता में पूरी सिद्धत के साथ

महसूस करता है। वह जानता हैं कि बदलते समय और उस पर हावी होती मशीनरी/साइबर संस्कृति ने मानवीय रिश्तों, उनके बीच की संवेदनाओं, आपसी तालमेल और कहानी द्वारा दी जाने वाली वाचिक और सांस्कृतिक परम्परा का नष्टभ्रष्ट कर दिया हैं। इसी की वजह से मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है।

'खोजना होगा अमृत कलश' कवि का यह संग्रह अपने शीर्षक के अनुरूप रिश्तों और संबंधों की टूटन, व्यवस्था और परंपरा से पनपी विद्रुपताओं को, अपने मन की व्यथा में खो चुकी मानवता को कविता के माध्यम से खोजने का प्रयत्न करता है। संग्रह की कविताएं मनुष्य जीवन की जटिल यात्रा से उपजी उदासियों, कुंठाओं, पलायनवादिता, भोग्यवादी संस्कृति, एकल परिवार, बेरोजगारी, मशीनीयुग के प्रभाव, आधुनिक व्यवस्था की जटिलताओं से मिली असफलता और तनाव के बीच सरलता, सहजता, उमंग, उत्साह के साथ सकारात्मक जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

इस कविता संग्रह की भाषा सहज, सरल और भावना प्रधान है। कविता को पढ़ते हुए ये सरलता और सहजता से हृदय की गहराई में उतरती जाती है. भाषाशैली में भावों को अनुसार गंभीरता और सहजता के साथसाथ सरलता का समावेश मिलता है। मगर पढ़ने पर वह सहज और ग्राहय रूप से सभी को प्रभावित करती हैं।

छंदमुक्त कविता शैली में लिखी गई कवितायेँ अपने उद्देश्य को सार्थक कर के पाठकों के मन को उद्देलित करते हुए अपना अचूक प्रभाव छोड़ जाती हैं। कविता पढ़ने के बाद पाठक बहुत देर तक अपलक उस के भावों को समझते हुए अंतर्मन में आत्मसात करता हुआ महसूस करता है. पाठक को लगता हैं कि ऐसा कुछ है जो छूट रहा है वह जीवन में जिसे पकड़ना बहुत जरुरी है. अन्यथा आने वाली पीढ़ी हमे कभी माफ नहीं करेगी।

प्रतिष्टित अयन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस संग्रह की प्रत्येक कविता सौद्देश्य लिखी गई है। इन को पढ़ने के बाद कह सकते हैं कि राजकुमार जैन राजन रचनात्मक दायित्वबोध के कवि है। इन की कविता में सामाजिक जटिलताओं और समस्याओं के दर्शन होते हैं। मैं समझता हूं कि इन का प्रस्तुत कविता संग्रह लेखकों और पाठकों के बीच अपनी गहरी पकड़ बना कर अपनीे सफलता के परचम लहरायाएगा, क्यों कि जीवन की जटिलताओं में से यह काव्य अमृत कलश खोजने की बहुत बड़ी कोशिश करता हैं। कवि वाकई बधाई का पात्र हैं। कि इन्होंने अपने पहले

ही काव्य संग्रह में अपने सम्पूर्ण भावों को उड़ेल कर काव्य साहित्य को एक अनुपम कृति प्रदान की है।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें